www.ccsuniversity.ac.in www.ccsutsmc.in

मासिक समाचार पत्र

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,मेरठ

परिसर

मेरठ,
सितंबर 2022
अंक– 6

यूके की संस्था संग शोध करेगा सीसीएसयू 2

विश्वविद्यालय की धरोहर हैं पुरातन छात्र 3

उपलब्धि : एक माह में सात पेटेन्ट प्रकाशित 4

बीजेएमसी व एमजेएमसी के छात्रों का फेयरवेल 6

नेताजी सुभाष चंद्र बोस सभागार में मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के साथ सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित करतीं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला (ऊपर) और तिलक पत्रकारिता स्कूल में अपने स्मार्ट फोन के साथ बीजेएमसी के छात्र।

स्मार्टफोन और टैबलेट मिले, युवाओं के चेहरे खिले

परिसर संवाददाता

मेरठ। शुक्रवार 26 अगस्त का दिन चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए बेहद यादगार रहा। इस दिन विश्वविद्यालय के नेताजी सुभाष चंद्र बोस सभागार में प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 312 विद्यार्थियों को टैबलेट और 700 विद्यार्थियों को स्मार्ट फोन का वितरण किया। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में युवाओं को बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

छात्र–छात्राओं को स्मार्टफोन और टैबलेट वितरित करने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गुरु की भूमिका में नजर आए। करीब 40 मिनट के संबोधन में उन्होंने कहा कि मेरठ को भूल गए तो देश का इतिहास डगमगा जाएगा। उन्होंने युवाओं से नए भारत के निर्माण में सहयोग देने के लिए कहा। मुख्यमंत्री ने कहा कि बाबा औघड़नाथ की ये धरती सिर्फ आस्था का ही केंद्र नहीं है, यहां से स्वाधीनता की लौ जली। धन सिंह कोतवाल और मातादीन वाल्मीकि के नेतृत्व में क्रांति का उद्गम हुआ। सीएम ने कहा कि तकनीक का जमाना है, स्मार्टफोन–टैबलेट के साथ जुड़कर आगे बढ़ो। कोई भी व्यक्ति अयोग्य नहीं होता, उसे योग्य योजक की आवश्यकता होती है। युवाओं की देश में बड़ी

आबादी उत्तर प्रदेश में है, जिस पर हम सबको गर्व होना चाहिए।

कार्यक्रम के दौरान स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तीकरण योजना के तहत स्मार्ट फोन और मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के तहत टैबलेट का वितरण किया गया। कुछ विद्यार्थियों को मुख्यमंत्री ने अपने हाथों से टैबलेट और स्मार्ट फोन दिए जबकि बाकी छात्रों को उनके विभागों में इनका वितरण किया गया।

तिलक पत्रकारिता और जनसंचार स्कूल के बीजेएमसी छठे सेमेस्टर के 27 छात्रों को स्मार्ट फोन का वितरण विभाग में निदेशक प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने किया। इस दौरान छात्रों का उत्साह देखते ही बनता था।

सीसीएसयू की तकनीक से आत्मनिर्भर बनेगा कांच उद्योग

- मेसर्स सिद्धिविनायक इंडस्ट्रीज लुधियाना को हस्तांतरित की गयी यह तकनीक
- रयासन शास्त्र विभाग में तीन साल तक शोध के बाद विकसित की गयी

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में पहली बार लैब में हुए शोध को उद्योग घराने को प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के केमिस्ट्री विभाग की ओर से विकसित आरकेएसएमटी लेयर तकनीक देश के कांच उद्योग को आत्म. निर्भर बनाएगी। अब ग्लास इंडस्ट्री को चीन से आने वाले पालीविनाइल ब्यूट्रील पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

सोमवार 29 अगस्त को विश्वविद्यालय में इस आशय का तकनीक हस्तांतरण हुआ। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने मेसर्स सिद्धिविनायक इंडस्ट्रीज लुधियाना को तकनीक प्रदान की। इसके बदले विश्वविद्यालय को 50 लाख रुपये मिले। वर्ष 2015 में भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग और सिद्धिविनायक इंडस्ट्रीज ने 'डेवलपमेंट आफ नोवल यूपी एंड थर्मल क्यूरेबल फार्मुलेशन फार ग्लास फार स्ट्रक्चरल एंड आर्किटेक्चरल एप्लीकेशंस' नामक शोध सीसीएसयू के केमिस्ट्री विभागाध्यक्ष प्रो. आरके सोनी को दिया था। प्रो. सोनी ने इस शोध पर एसोसिएट प्रोफेसर डा. मीनू तेवतिया के साथ मिलकर काम किया। दोनों लोगों ने सुरक्षित कांच उत्पादन के लिए जरूरी पालीविनाइल ब्यूट्रील लेयर के विकल्प की तकनीक विकसित की। जिसका नाम दोनों ने अपने नाम पर ही आरकेएसएमटी लेयर रखा और पेटेंट भी कराया।

टूटने पर नहीं बिखरता कांच

पालीविनाइल ब्यूट्रील का इस्तेमाल दो कांच के बीच एक लेयर के तौर पर होता है। यह सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली इंटरलेयर सामग्री है। भारत में इसकी शीट सबसे ज्यादा चीन से आयात होती है। दो कांच के बीच इस्तेमाल इस लेयर से कांच सुरक्षित बनता है।

दुर्घटना होने पर लेयर के दोनों ओर लगे कांच के टुकड़े बिखरने की बजाय इसी लेयर से चिपके रहते हैं। ऐसे सुरक्षित कांच का इस्तेमाल रेलवे, आटो मोबाइल,ऊंची इमारतों, रक्षा, विमान, समुद्री जहाजों व घरेलू प्रयोगों के सामान में किया जाता है।

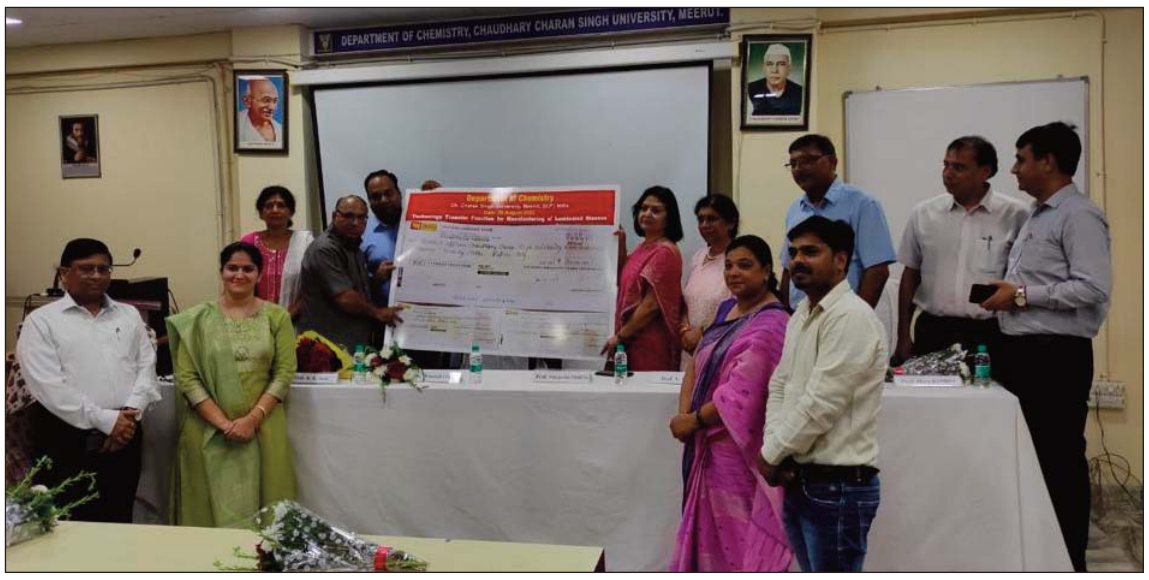

कांच उद्योग को तकनीकी हस्तांतरण के अवसर पर कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला और उद्योग के प्रतिनिधि।

तीन चरणों में हस्तांतरित होगी तकनीक

इस शोध में तीन तकनीक विकसित की गई है। इनमें आर्कीटेक्चरल ग्लास, आटोमोबाइल ग्लास व सिक्योरिटी ग्लास बनाए जा सकेंगे। विदेशों से आने वाली लेयर महंगी है और बनाने की प्रक्रिया भी जटिल है। डा. मीनू तेवतिया के बताया कि तीनों तकनीक क्रमवार तीन चरणों में इंडस्ट्री को प्रदान की जाएंगी। कुलपति ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत बनाने के आह्वान की दिशा में सीसीएसयू का योगदान है।

सीसीएसयू और इंस्टीट्यूट फार एडवांसमेंट आफ वैदिक मैथमेटिक्स, यूनाइटेड किंगडम के बीच हुए समझौते के दौरान कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला और विदेशी सस्थान के पदाधिकारी।

यूके की वैदिक गणित संस्था संग शोध करेगा सीसीएसयू

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के गणित विभाग ने बृहस्पतिवार 1 सितंबर को दो सहयोग समझौतों (एमओयू) पर हस्ताक्षरित किए। पहला एमओयू विश्वविद्यालय और इंस्टीट्यूट फार एडवांसमेंट आफ वैदिक मैथमेटिक्स, यूनाइटेड किंगडम के बीच हुआ। यह वैदिक गणित का उच्च स्तरीय संस्थान है जिसमें यूके, यूएसए, साउथ अफ्रीका, नीदरलैंड, फिलिपिंस आदि करीब 16–17 देशों में प्रतिनिधि कार्य कर रहे हैं। अब भारत में सीसीएसयू इनके साथ मिलकर वैदिक गणित में नए शोध कार्य करेगा।

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने विश्वविद्यालय की ओर से और आइएवीएम के चेयरमैन जेम्स ग्लोवर ने करार पर हस्ताक्षर किया। अब विदेशी भी वैदिक गणित के महत्व को पहचान रहे हैं। इसका उदाहरण जेम्स ग्लोवर ने वैदिक गणित के सूत्रों के उच्चारण से किया। उनका वैदिक गणित संस्थान शोध कार्य के लिए देश–विदेश में जाना जाता है।

इस एमओयू के अंतर्गत दोनों संस्थान के शिक्षक व शोधार्थी आपसी तालमेल करके वैदिक गणित के नए आयामों पर कार्य करेंगे। विश्वविद्यालय एवं आइएवीएम संस्थान मिलकर नए अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य करेंगे जिससे भविष्य में शोध कार्य को आगे बढ़ाया जा सके। आपसी सहमति से जो भी शोध कार्य होंगे उसे उच्च स्तरीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाएगा।

दूसरा एमओयू आइएफटीएम विवि मुरादाबाद के साथ

विश्वविद्यालय का दूसरा एमओयू आइएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद के साथ हुआ जिसके अंतर्गत शिक्षक, शोधार्थी व छात्र–छात्राओं को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। इसी के साथ दोनों विश्वविद्यालय मिलकर नए अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य करेंगे और किए गए शोध कार्य को प्रकाशित किया जाएगा। सभी प्रकार के कार्यक्रमों जैसे सेमिनार, वर्कशाप, फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम और अन्य शैक्षिक क्रियाकलापों में सहभागिता करेंगे। इसके अंतर्गत कई शार्ट टर्म शैक्षिक कार्यक्रम भी शुरू। इस अवसर पर कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला, कुलसचिव धीरेंद्र कुमार आदि उपस्थित रहे।

वैदिक गणित के 16 सूत्र, 13 उप सूत्र बताए

गणित विभाग की ओर से हुई सात दिवसीय वैदिक गणित कार्यशाला

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के गणित विभाग की ओर से सात दिवसीय वैदिक गणित कार्यशाला का आयोजन किया गया। आयोजन के पहले दिन कार्यशाला में आनलाइन जुड़े यूके में आईएवीएम के सह–संस्थापक और चेयरपर्सन डा. जेम्स ग्लोवर ने वैदिक गणित के 16 सूत्र और 13 उप सूत्रों से अवगत कराया। साथ ही उन्होंने इसके उपयोग भी बताए।

उन्होंने गुणन को निखिलम सूत्र के माध्यम से समझाया और भाग को परावर्त्य और ध्वजांक माध्यम से बहुत सरल विधि से समझाया। उन्होंने घन निकालने के लिये अनुरप्येण विधि को बताया। अन्त्योरेव सूत्र की मदद से समांतर श्रेणी, गुणोत्तर श्रेणी को हल किया और अन्त्योरेव सूत्र के 11 प्रयोगों को विस्तार से बताया।

जवाहर नेहरू विश्वविद्यालय के डा. गजेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि ऋषि पिंगला बाइनरी संख्या के जनक थे और उन्होंने ही लघु व गुरु का सबसे पहले प्रयोग किया था। साथ ही पिंगला संख्या पद्धति व आधुनिक बाइनरी संख्या प्रणाली को भी समझाया और ग्राफ सिद्धांत के बारे में बताते हुए उपयोगिताओं पर प्रकाश डाला।

विषय विशेषज्ञ डा. कैलाश विश्वकर्मा, प्रो. एम.के. गुप्ता ने वैदिक गणित के महत्व पर चर्चा की। प्रोफेसर जयमाला ने वैदिक गणित के अध्ययन के लिये प्रोत्साहित किया। कार्यशाला के अध्यक्ष प्रोफेसर शिवराज सिंह ने बताया कि वैदिक गणित 2018 से वैदिक गणित में डिप्लोमा कोर्स संचालित किया जा रहा है। हर साल इसमें आवेदन करने वालों की संख्या बढ़ रही है।

प्रोफेसर मुकेश कुमार ने बताया कि कार्यशाला का उद्देश्य वैदिक गणित की ओर विश्लेषणात्मक व सकारात्मक सोच पैदा करना, लोगों के मन में गणित विषय के भय को मिटाना और लोगों में गणित के प्रति विश्वास पैदा करना है।

दूसरे दिन दूसरे सत्र में नागपुर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर डा. देशपांडे ने शुल्ब सूत्र और अपरिमेय संख्याओं की अनुमानित मान जानकारी दी। तीसरे सत्र में टोरंटो में कार्यरत डा. बृजेश कुमार खंबूलजा ने वैदिक गणित की फिलासफी पर सारगर्भित भाषण दिया। कार्यशाला के अंतिम दिन गुरुकुल कांगड़ी यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर निधि हांडा ने विश्व में गणित के प्रभाव पर अपना व्याख्यान दिया।

सूर्य और चंद्र ग्रहण का पता भारतीयों ने ही लगाया

कार्यशाला के दूसरे दिन डीआरडीओ में संयुक्त सचिव पद पर कार्यरत और इंडियन क्रोनोलाजी पर पांच पुस्तकें लिखने वाले डा. वेदवीर आर्य ने भारतीयों के गणित में योगदान के कालक्रम पर जानकारी पूर्ण वक्तव्य दिया। उन्होंने बताया कि माया सुर सिद्धांत 22 फरवरी 6768 ईसा पूर्व से हैं। प्रथम बार भारतीयों ने ही चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण होने के सही समय का पता लगाया था। पाई की अपरिमेय संख्या, शून्य का आविष्कार, गोलाकार त्रिकोणमति सभी भारतीय गणितज्ञों की देन है और अल्जेब्रा शब्द भी वेदों से ही लिया गया है। संख्या सिद्धांत का कालक्रम वैदिक काल से है जो 11,500 ईसवी पूर्व का है।

आधुनिक गणित में 98 प्रतिशत सूत्र वैदिक गणित से

वैदिक गणित कार्यशाला में जयपुर के आर्यन वैदिक मैथमेटिक्स के अध्यक्ष नवीन भार्गव ने बताया कि आधुनिक गणित में लिए गए 98 प्रतिशत सूत्र वैदिक गणित से ही लिए गए हैं। उन्होंने वैदिक गणित को आधुनिक गणित से बेहतर बताते हुए कहा कि इसकी सहायता से साठ गुना तक तेज गणना की जा सकती हैं। विलोकनम सूत्र की सहायता से मात्र पांच सेकेंड के भीतर दो अंकों और तीन अंकों की संख्याओं का वर्ग और घन किया जा सकता है और वर्गमूल घनमूल भी निकाला जा सकता है। आधुनिक गणित में त्रिकोणमिति में दो भुजाओं का पता होने पर ही तीसरी भुजा का पता लगा सकते हैं जबकि वैदिक गणित की सहायता से एक भुजा के पता होने पर भी दो भुजाओं का पता लगाया जा सकता है।

'कबीर को समग्रता में समझने की जरूरत है'

अर्पित शर्मा

मेरठ। संत कबीर अकादमी मगहर और चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय द्वारा 23 अगस्त को आयोजित राष्ट्रीय सगोष्ठी कबीर का चिंतन और भारतीय समाज में बीज वक्ता प्रो. गोपेश्वर सिंह ने कहा कि कबीर को विभिन्न वर्गों में बाँटने की बजाए उन्हें समग्रता में समझने की जरूरत है। कबीर की आध्यात्मिकता कर्मकाण्डी नहीं है। देश का कोई प्रान्त ऐसा नहीं है जहाँ कबीर के अनुयायी न हों।

प्रो. गोपेश्वर सिंह न कहा कि महात्मा गाँधी के सर्वधर्म समभाव और श्रम के विचार पर कबीर का प्रभाव है, जिसका प्रमाण चरखा है। कबीर का काव्य श्रम, अध्यात्म (संन्यास) और ग्राहर्स्थ की त्रिवेणी है। जिसे गाँधी के जीवन–दर्शन में भी देखा जा सकता है।

प्रो. सदानंद साही ने कहा कि पाखंड भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन गया था। कबीर की मौलिक देन इसी पाखंड पर प्रहार है। हिंदी आलोचना में कबीर को लेकर विसंगतियां दिखाई

बृहस्पति भवन में कबीर पर आयोजित संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते वक्ता।

देती हैं। जिसका कारण कबीर द्वारा सुविधा संपन्न लोगों को प्रश्नांनकित करना हैं।

डॉ. राजेश पासवान ने कहा कि कबीर जा. तिवाद का विरोध करते हैं। श्रेष्ठता के कृत्रिम मानकों पर कबीर का विश्वास नहीं है। कामगार को हेय दृष्टि से देखने से समाज का विकास नहीं हो सकता। संत कवि कर्म को महत्व देते हैं, छुआछूत और भेदभाव का विरोध करते हैं।

प्रो. शंभुनाथ तिवार ने कहा कि कबीर ज्ञानमार्गी एवं प्रेममार्गी दोनों हैं। ज्ञानमार्गी कहना कबीर को सीमित करना हैं। ढाई आखर प्रेम का कबीर की कविता के केंद्र में है। कबीर एक खांचे में फिट होने वाले कवि नहीं हैं।

प्रो. के. श्रीलता ने कहा कि कबीर मध्यकलीन परिस्थितियों में जन्में थे, वे कई मतों से प्रभावित थे। इतना अधिक समय गुजरने के बाद भी कबीर की ध्वनि हमारे कानों में गूँजती है जो उनकी प्रासंगिकता सिद्ध करती है।

प्रो. असलम ने बताया कि उर्दू साहित्यकारों ने कबीर को वह मकाम नहीं दिया, जिसके वे हकदार हैं। कबीर उर्दू और हिंदी दोनों भाषाओं के बड़े कवि हैं।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए हिंदी विभाग के अध्यक्ष और कला संकाय के डीन प्रो. नवीन चंद लोहनी ने कहा कि भरतीय समाज की विशेषता विविधता में एकता है। कबीर का चिंतन इसी आदर्श को आगे बढ़ता है। कबीर के काव्य को वर्तमान युग की विडंबनाओं के परिप्रेक्ष्य में समझने की जरुरत है। सांस्कृतिक संध्या की अध्यक्षता प्रो. वाई. विमला ने की जिसमें गजेन्द्र पांडेय ने कबीर के भजन गाये। संचालन मोनू सिंह तथा विद्या सागर सिंह ने किया।

संगोष्ठी में कई विश्वविद्यालयों के शिक्षकों और शोध छात्रों ने भाग लिया।

संरक्षक : प्रोफेसर संगीता शुक्ला (कुलपति), **मुख्य संपादक** : प्रोफेसर प्रशांत कुमार, **संपादक** : डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, **समाचार संपादक** : लव कुमार सिंह, **संपादकीय सहयोगी** : श्रीमती बीनम यादव, **संपादकीय टीम** : अर्पित शर्मा, सूर्य प्रताप सिंह, भारत अधाना, जेसिका, कावेरी, आकाशपाल, विकास **(बीजेएमसी तृतीय वर्ष)**, गोस–ए–आजम, वरुणिका, लक्ष्मी, अदिति, **(बीजेएमसी द्वितीय वर्ष)**।

पुरातन छात्र मिलन समारोह में अपने विचार व्यक्त करतीं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला (बाएं) और संस्थान से जुड़ी यादें साझा करते पुरातन छात्र (दाएं)।

विश्वविद्यालय की धरोहर हैं पुरातन छात्र

धूमधाम से आयोजित हुआ तिलक पत्रकारिता और जनसंचार स्कूल का पुरातन छात्र मिलन समारोह

पुरातन छात्र सम्मेलन में सांस्कृतिक कार्यकम प्रस्तुत करतीं छात्राएं।

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल में विभाग के 21 वर्ष पूर्ण होने पर शनिवार 31 जुलाई को पुरातन छात्र सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस दौरान विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा कि पुरातन छात्र, विभाग और विश्वविद्यालय की धरोहर होते हैं।

उन्होंने कहा कि पुरातन छात्र अपने कार्य क्षेत्रों में एक प्रकार से विश्वविद्यालय का प्रतिनिधत्व ही करते हैं। इसीलिए पुरातन छात्रों की यह जिम्मेदारी होती है कि अध्ययन पूरा करने के बाद विभाग से जुड़े रहें। अपने अनुभव, जानकारी, तकनीकी ज्ञान, इंडस्ट्री की आवश्यकताओं से विभाग के नए साथियों से परिचित कराते रहें। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की गतिविधियों से विभाग नए कीर्तिमान स्थापित करने में सफल होगा। जनसंचार विभाग के छात्रों का पुरातन छात्र मार्गदर्शन करें जिससे वह नये आयाम को छू सके। विश्वविद्यालय की प्रतिकुलपति प्रोफेसर वाई विमला ने कहा कि पुरातन छात्र मिलन समारोह एक श्रृखंला है जिसमें न केवल विद्यार्थियों का परिचय होता है बल्कि नए विद्यार्थियों को बहुत कुछ जानने का अवसर प्राप्त होता है।

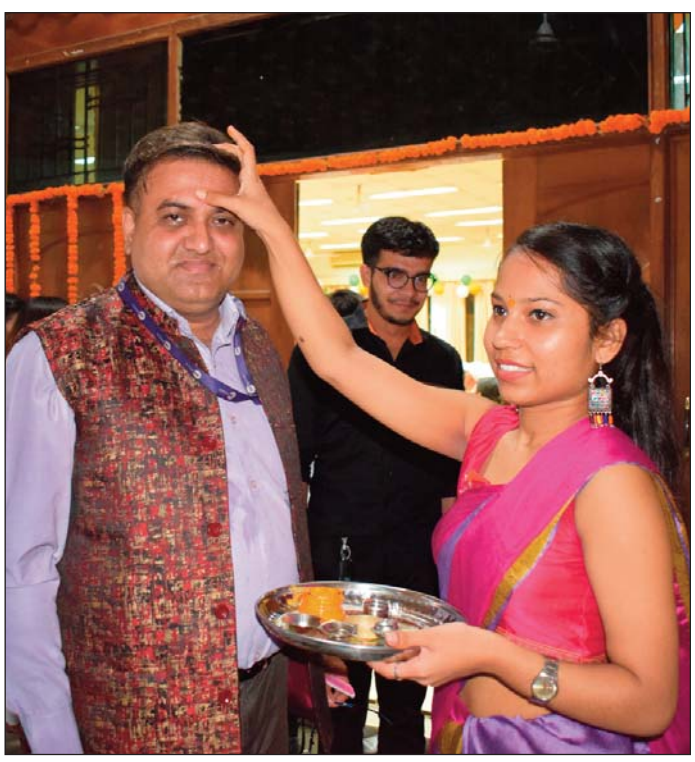

सम्मेलन में पुरातन छात्रों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया।

पत्रकारिता विभाग से जुड़ी यादें साझा करते पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव (बाएं), प्रोफेसर जे. के. पुण्डीर (मध्य) और निदेशक डॉ. प्रशांत कुमार।

विभाग के निदेशक प्रो. प्रशांत कुमार ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा विभाग के 21 साल के सफर की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने अपनी स्थापना के इस वर्ष 21 साल पूरे किये हैं। वर्ष 2001 में विभाग में पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय में स्नातोकत्तर पाठ्यक्रम शुरू हुआ था।

वरिष्ठ पत्रकार अजय मित्तल ने लोकमान्य तिलक की पत्रकारिता पर विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता सग्राम को और अधिक प्रभावी बनाने में लोकमान्य तिलक के समाचार पत्र केसरी ने अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया था।

उन्होंने कहा कि केसरी में छपे लेखों ने गणेश उत्सव तथा शिवाजी उत्सव के आयोजनों की महत्ता को लोगों के बीच स्थापित करने में उत्प्रेरक का कार्य किया। तिलक की निर्भीक पत्रकारिता ने अंग्रेजों द्वारा बनाए गए प्रेस कानूनों की परवाह नहीं की, वरन् अपने लेखों के माध्यम से समाज को सरकार के विरूद्ध क्रांति करने के लिए प्रेरित किया। यही कारण है कि अंग्रेज उनको भारत में अशांति का जनक कहते थे।

विभाग के पूर्व समन्वयक प्रो. जेके पुंडीर ने इस अवसर पर विद्यार्थियों को समयबद्धता और अनुशासन का महत्व बताया। विभाग के पूर्व समन्वयक डा. असलम जमशेदपुरी ने विद्यार्थियों में तकनीकी और ज्ञान के सम्मिश्रण पर जोर दिया। डॉ मनोज कुमार श्रीवास्तव ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इस दौरान पुरातन और वर्तमान छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। पूर्व छात्र लोकेश धामा, सचिन सागर, आशीष महोश्वरी ने अपनी प्रस्तुति दी। वर्तमान छात्रों में अनुष्का, लक्ष्मी, नैना, सागर आदि ने नृत्य प्रस्तुत किए। बीनम यादव ने पूरे कार्यक्रम का समन्वय किया। लव कुमार सिंह तथा सौम्या जोशी ने मंच संचालन किया।

सम्मेलन में बीतें दिनों की झलकियां देखतीं कुलपति और पुरातन छात्र (बाएं), बहुत समय बाद मिलने पर फोटो खिंचाते पुरातन छात्र (मध्य) और गीत प्रस्तुत करते वर्तमान छात्र।

उपलब्धि : एक माह में सात पेटेन्ट प्रकाशित

इस दौरान 17 पेटेन्ट फाइल किए गए, सभी प्रकाशित पेटेन्ट समाज के लिए उपयोगी

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के बौद्धिक सम्पदा प्रकोष्ठ (आईपी सेल) द्वारा पिछले एक माह में 17 पेटेन्ट आवेदन प्रस्तुत किए गए, जिनमें से सात पेटेन्ट प्रकाशित हो चुके हैं। यह विश्वविद्यालय के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

आईपी सेल के नोडल अधिकारी प्रो. शैलेंद्र सिंह गौरव ने बताया कि विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला के निर्देशन में पिछले एक माह में 17 पेटेन्ट फाइल हुए हैं, जिनमें से सात पेटेन्ट प्रकाशित हो गए हैं। यह विश्वविद्यालय के लिए ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इन सात पेटेन्ट में से तीन पेटेन्ट भौतिकी विभाग, दो अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, एक रसायन विज्ञान विभाग तथा एक जन्तु विज्ञान विभाग से प्रकाशित हुए हैं।

विश्वविद्यालय के प्रेस प्रवक्ता प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने बताया कि भौतिकी विभाग के तीन पेटेन्ट विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर बीरपाल सिंह द्वारा

प्रो. बीरपाल सिंह, प्रो. शैलेंद्र गौरव, प्रो. आरके सोनी, प्रो. नीलू जैन गुप्ता

प्रकाशित कराए गए हैं। इन तीनों पेटेन्ट में पहला 'एअर बार्न माइक्रोव सिल्ड एंड एअर प्योरिफायर एंड मैथेड देअरआफ' है। इस पेटेन्ट में हवा में रहने वाले सूक्ष्मजीवी के माध्यम से हवा को शुद्ध किया जा सकता है। शोध में यह पाया गया कि दो स्तरों पर होने वाली इस प्रक्रिया को सार्वजनिक स्थानों पर हवा के शुद्धिकरण के लिए प्रयोग किया जा सकेगा।

दूसरा पेटेन्ट 'नोबल मैथेड फार साइड कन्ट्रोल्ड सिन्थैसिस आफ नैनो पार्टिकल्स' है। इस शोध प्रक्रिया के माध्यम से एक साइज के नैनो पार्टिकल्स बिना किसी कैपिंग एजेन्ट, सर्फेक्टेन्ट एवं जटिल प्रक्रिया रहित बड़ी मात्रा में बनाए जा सकेंगे।

तीसरा पेटेन्ट 'मौलिब्डिनम डाइसल्फाइड नैनोकैक्टस एंड मैथेडस आफ प्रिपरेशन देअरआफ' है। इस शोध प्रक्रिया द्वारा सर्फेस एरिया को बढ़ाया गया है। जिससे एल्युमिनियम की सक्रियता को बढ़ाया जा सकेगा।

अनुवाशिंकी एवं पादप प्रजनन विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं आईपी सेल के नोडल अधिकारी प्रो. शैलेन्द्र सिंह गौरव द्वारा दो पेटेन्ट प्रकाशित कराए गए हैं। इनमें पहला पेटेन्ट 'जिंक आक्साइड बेस्ड नैनो फर्टिलाइजर फार्मुलेशन एंड मैथेड देअरआफ' है। इस शोध में पाया गया इसके कम मात्रा के प्रयोग से फसलों का उत्पादन बढ़ेगा साथ ही जीवों के लिए नान टाक्सिक रहेगा। दूसरा पेटेन्ट 'सिल्वर नैनो पार्टिकल्स बेस्ड नैनो पैस्टिसाइडल फार्मुलेशन एंड मैथेड देअरआफ' है। इस शोध के माध्यम से पाया गया कि सिल्वर नैनो पार्टिकल्स बेस्ड नैनो पैस्टिसाइडल के कम मात्रा में प्रयोग से फसलों को बीमारियों से बचाया जा सकता है।

रसायन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर आरके सोनी द्वारा भी एक पेटेन्ट प्रकाशित कराया गया जो 'थर्मल क्योरेबल हाई इम्पैक्ट रैसिसटेन्ट लैमिनेटेड ग्लास एंड ए प्रोसेस फार प्रिपरेशन देअरआफ' है। जन्तु विज्ञान विभाग की प्रोफेसर नीलू जैन गुप्ता द्वारा 'नोबेल प्रोसेस फार प्रिवेन्शन एंड कंट्रोल आफ टाइप टू डायबिटिस' नाम से पेटेन्ट प्रकाशित कराया गया है।

ये सभी पेटेन्ट अत्याधुनिक तकनीकी आधारित शोध के माध्यम से कराये गए हैं। ये सभी शोध समाज उपयोगी होने के साथ–साथ शोध के क्षेत्र में प्रेरणा बनेंगे तथा नए आयाम स्थापित करेंगे।

कुलपति ने सभी शिक्षकों को दी बधाई

कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने सभी शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि उनके वर्षों के प्रयास का परिणाम है। इससे न केवल शोधार्थियों, साथी शिक्षकों को शोध की नयी दिशा मिलेगी बल्कि समाज के लिए भी यह अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे। प्रो. वाई विमला, कुलसचिव धीरेन्द्र कुमार, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. भूपेन्द्र, संकाय अध्यक्ष विज्ञान प्रो. मृदुल गुप्ता आदि ने भी शिक्षकों को बधाई दी है।

ग्राम पाठशाला और विश्वविद्यालय के बीच हुए सहयोग समझौते के दौरान मौजूद कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला, विश्वविद्यालय के पदाधिकारी और सामाजिक संस्था ग्राम पाठशाला के पदाधिकारी।

भारतीय अंग्रेजी लेखन पर बंटी दिखी वक्ताओं की राय

भारत अधाना

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में सोमवार 29 अगस्त को राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया। इसका विषय 'इंडिया इन इंडियन इंग्लिश फिक्शन' रहा। इस विषय पर वक्ताओं की राय अलग–अलग रही।

विषय पर मगध विश्वविद्यालय बोध गया के प्रोफेसर नीरज कुमार ने कहा कि भारतीय अंग्रेजी लेखन में भारतीय संस्कृति व उसके विविध आयाम दिखते हैं। भारत के अंग्रेजी लेखकों ने भारतीय संवेदनशीलता, पारिवारिक मूल्य, आस्थाएं व दर्शन को अपनी रचनाओं में बखूबी स्थान दिया है।

महात्मा गांधी काशी विश्वविद्यालय की डा. निशी सिंह ने कहा कि अंग्रेजी उपन्यासों में भारतीय महिलाओं के

अंग्रेजी विभाग में हुआ राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

सशक्तिकरण की चर्चा करने वाले पुरूष उपन्यासकार पितृसत्तात्मक मानसिकता से बाहर नहीं निकल पाए हैं। डॉ. जीवन ने कहा कि भारतीय अंग्रेजी उपन्यासकारों ने भारत का वर्णन अपने अनुभव व परंपरागत ज्ञान के आधार पर किया है। लेखक व प्रोफेसर विकास शर्मा ने कहा कि भारतीय अंग्रेजी लेखको कों अतियथार्थ के चित्रण के लोभ में भारत की गलत तस्वीर विश्व के समक्ष प्रस्तुत नहीं करना चाहिए। प्रो. प्रतिभा त्यागी ने कहा कि भारतीय अंग्रेजी लेखक पाश्चात्य मानसिकता के शिकार हो चुके हैं।

मनोविज्ञान विभाग पढ़ाएगा बच्चों के लालन–पालन का पाठ

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में इस सत्र से पहली बार पीजी डिप्लोमा इन गाइडेंस एंड काउंसिलिंग का पाठ्यक्रम शुरू हो रहा है।

विभागाध्यक्ष प्रोफेसर संजय कुमार ने बताया कि यह नया कोर्स रोजगार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसे करने वाले अभ्यर्थी स्वास्थ्य, क्लीनिकल, स्कूल काउंसिलिंग में आगे बढ़ सकेंगे। साथ ही दिव्यांगता और पुनर्वास के क्षेत्रों में भी लोगों की काउंसिलिंग करेंगे। यह कोर्स पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कहीं और नहीं है। इसके अलावा दो शार्ट टर्म कोर्स भी शुरू हो रहे हैं। एक आर्ट ऑफ पेरेंटिंग और दूसरा कल्टीवेटिंग हैप्पीनेस एंड वेल बीइंग है। यह कोर्स 15 दिन यानी 30 घंटे के हैं। सप्ताह में पांच दिन पढ़ाई होगी। तीन सप्ताह में कोर्स पूरा होगा। इसके लिए 25 सीटें हैं।

गांवों में पुस्तकालय बनाएगा विश्वविद्यालय

सामाजिक संस्था ग्राम पाठशाला से पांच साल के लिए सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किये

सूर्य प्रताप सिंह

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय अपने परिक्षेत्र के गांवों में पुस्तकालय स्थापित करेगा। इसके लिए मंगलवार 30 अगस्त को विश्वविद्यालय ने सामाजिक संस्था ग्राम पाठशाला के साथ सहयोग समझौते (एमओयू) पर हस्ताक्षर किये।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय और ग्राम पाठशाला के बीच पांच साल के लिए एमओयू किया गया। इसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय बनाने का कार्य किया जाएगा। इसके अतिरिक्त सामाजिक गतिविधियां, पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संसाधन शोध एवं प्रकाशन, स्टार्टअप, सेमिनार, कार्यशाला आदि क्षेत्रों में दोनों संस्थाएं मिलकर कार्य करेंगी। विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के साथ प्रशिक्षण एवं विकास आधारित कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाएगा, साथ ही शिक्षा के प्रति जागरुकता, जल संरक्षण, कृषि, स्वास्थ्य एवं बाल संरक्षण अधिकारों के प्रति भी समय–समय पर अभियान चलाया जाएगा।

कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि ग्राम पाठशाला के साथ विश्वविद्यालय अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन तो करेगा ही, साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे युवा वर्ग को पुस्तकालय में जाकर पठन–पाठन के वातावरण से जोड़कर उनके कैरियर को उनकी रुचि एवं प्रतिभा के अनुरूप नई दिशा देगा। उन्होंने कहा कि यह संस्था 7 राज्यों के 350 गांव में पुस्तकालय स्थापित कर चुकी है। हमारा लक्ष्य रहेगा कि ग्रामवासियों की सहायता से आगामी छह माह में विश्वविद्यालय परिक्षेत्र में 100 पुस्तकालय स्थापित करें। उन्होंने नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय का उदाहरण देते हुए कहा कि नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय इसी प्रकार सामाजिक सहायता के मॉडल पर न केवल स्थापित किए गए बल्कि उनका संचालन भी इसी मॉडल पर किया गया।

उन्होंने बताया कि नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय के क्षेत्रों के लोग अपने घर की आवश्यकताओं के लिए जिस प्रकार धनराशि को बचाकर रखते थे, उसी तरह इस उसका एक हिस्सा उन विश्वविद्यालय के संचालन के लिए भी किया निकाला जाता था। ग्राम पाठशाला के साथ मिलकर हम उसी मॉडल पर कार्य करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय स्थापित कराएंगे। भौतिकी विभागाध्यक्ष प्रो. वीरपाल सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया।

सात राज्यों में 350 पुस्तकालय

ग्राम पाठशाला के प्रतिनिधि एवं विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र डॉ. लाल बहार ने कहा कि दो वर्षों में देश के सात राज्यों में 350 पुस्तकालय ग्रामवासियों की सहायता से बनाए हैं। पुस्तकालयों में सभी आधुनिक सुविधाएं जैसे इंटरनेट युक्त कंप्यूटर, अद्यतन पुस्तकें, सीसीटीवी कैमरे, एसी आदि उपलब्ध हैं। संस्था में सभी लोग नौकरीपेशा हैं तथा शनिवार एवं रविवार को गांवों में जाकर इस प्रकार के कार्य करते हैं।

'प्रत्येक वह व्यक्ति शिक्षक जिससे हम कुछ सीखते हैं'

शिक्षक दिवस पर विश्वविद्यालय में हुए शिक्षकों के सम्मान समारोह में कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के अप्लाइड साइंस हॉल में शिक्षक दिवस पर आयोजित शिक्षक सम्मान समारोह में कुलपति प्रोफेसर संगीत शुक्ला ने कहा कि शिक्षक केवल वह नहीं होता जो हमें कक्षा में पढ़ाता है प्रत्येक वह व्यक्ति जिससे हम कुछ ना कुछ सीखते हैं, समझते हैं वह शिक्षक होता है। इस दौरान कुलपति और विश्वविद्यालय के शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

कुलपति ने कहा कि सदियों से शिक्षक ऐसी भूमिका में रहा है कि वह मार्गदर्शक होने के साथ–साथ अच्छी बुरी बातों से आपको अवगत कराता हैं इसलिए वह सबसे अधिक सम्मान का भी हकदार हैं। उन्होंने आहवान किया कि विश्वविद्यालय का प्रत्येक शिक्षक अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन संयुक्त रूप से करते हुए विश्वविद्यालय को शिखर तक पहुंचाने का प्रयत्न करें।

प्रो० वाई विमला ने कहा कि हम जिससे भी कुछ सीखते है वह भी शिक्षक होता है। शिक्षा का मतलब अपने दिमाग में सूचनाओं व जानक. ारियों को भरना नहीं है, बल्कि उनका सही उपयोग करना ही शिक्षा है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को व्यावहा. रिक बनाना है, जो शिक्षा व्यावहारिक नहीं है, वह व्यर्थ है। कार्यक्रम संयोजक प्रो० बिंदु शर्मा ने सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ वंदना ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर नीलू जैन गुप्ता ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव धीरेंद्र कुमार, प्रो० योगेंद्र सिंह, प्रो० संजय भारद्वाज सहित विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक उपस्थित रहे।

अप्लाइड साइंस के ऑडिटोरियम में शिक्षक सम्मान समारोह में सम्मानित शिक्षकों के साथ कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला।

भारतीयों के परीक्षण को अंग्रेजों ने अपना बताया

परिसर संवाददाता

मेरठ। विज्ञान भारती, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय और प्रज्ञा प्रवाह के सहयोग से बुधवार 24 अगस्त को सीसीएसयू परिसर में 'स्वतंत्रता आंदोलन और विज्ञान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता और विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री जयंत सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि अक्सर हममें भ्रम रहता है कि अंग्रेजों ने रेलवे दी, बिजली दी। निश्चित रूप से भ्रम ही है क्योंकि उनकी मंशा भारत के धन को पारंपरिक नहीं बल्कि आधुनिक तरीके से लूटने की थी।

जयंत सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि अंग्रेजों से पूर्व जितने भी आक्रांता भारत आए, उन्होंने भारत को लूटा और उस सामान को हाथी, घोड़े, गधे आदि पर लाद कर ले गये। अंग्रेजों ने भारत को लूटा और उसे आधुनिक तौर–तरीकों के साथ समुद्री रास्तों से जहाजों के माध्यम से ले गये। जिस समय अंग्रेज भारत आये, उस समय इंग्लैंड की जीडीपी अकेले बंगाल की जीडीपी से एक चौथाई थी। विज्ञान के क्षेत्र में जगदीश चंद्र बोस,

'स्वतंत्रता आंदोलन और विज्ञान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

सर वेंकटरमण जैसे वैज्ञानिकों ने आजादी के आंदोलन में अभूतपूर्व योगदान दिया है। बोस जिन्होंने बेतार का परीक्षण 1895 में किया, उसी के आधार पर मार्कोनी ने रेडियो का आविष्कार किया। ऐसे अनेक वैज्ञानिकों द्वारा किये गये कार्यों को उन्होंने अपने उद्बोधन में व्यक्त किया।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा कि भारत प्राचीन काल से ही विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। हम गणित की बात करें तो शून्य भारत की ही देन है। योग, आयुर्वेद, आध्यात्म जैसे क्षेत्रों में विश्व ने हमारा अनुसरण किया है। हमारे धर्म ग्रन्थों और वेदों में ऐसे अनेक प्रमाण हैं जिससे सिद्ध होता है कि हम विश्व गुरु थे। विशिष्ट अतिथि डॉ. दर्शनलाल अरोड़ा ने भी विचार व्यक्त किये। संचालन प्रोफेसर रूप नारायण ने और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. दीपक शर्मा ने किया।

'स्वतंत्रता आंदोलन और विज्ञान' विषय पर संगोष्ठी में मंचासीन कुलपति और अन्य वक्ता तथा श्रोता।

संगोष्ठी में ताजा हो गईं छात्रों की यादें

मेरठ। विश्वविद्यालय और राजनीति विज्ञान पुरातन छात्र परिषद ने राजनीति विज्ञान विभाग में 'भारत का स्वातंत्र्य समर और राजनीति ध्रुवीकरण पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में' विषय पर संगोष्ठी की। विभागाध्यक्ष प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने परिवार की तरह साथ साथ रहने व भारत का विश्व में नाम ऊंचा करने का संदेश दिया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ इलाहाबाद विश्वविद्यालय के निदेशक प्रो मधुरेंद्र कुमार ने परंपराओं से जुड़े रहने के साथ समाज की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने का निवेदन किया। पुरातन छात्र व रक्षा मंत्रालय में अपर सचिव डा. सतोष कौशिक ने विषय का गहन अध्ययन का मंत्र दिया। पुरातन छात्र व पूर्व दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री डा. कुलदीप उज्ज्वल ने 1857 की क्रांति पर चर्चा की। विभाग की पूर्व अध्यक्ष प्रो. अर्चना शर्मा यादों को ताजा कर भावुक हों गयीं। मुख्य अतिथि चौ. रणवीर विवि जींद हरियाणा के कुलपति प्रो. रणपाल सिंह ने कहा कि सफलता के लिए अतिरिक्त मेहनत करनी होगी।

मुद्दों और संवेदनाओं को पर्दे पर उकेरना फिल्म का मुख्य उद्देश्य

फिल्म एप्रीसिएशन कार्यशाला में बोलते सुरेंद्र सिंह (बायें) और नितिन यदुवंशी (नीचे)।

परिसर संवाददाता

मेरठ। समाज के मुद्दों व संवेदनाओं को पर्दे पर उकेरना फिल्म का मुख्य उद्देश्य होता है। भारतीय सिनेमा के सौ साल के इतिहास पर नजर डालें तो ऐसी अनेक फिल्में बनी हैं, जिनमें समाज को प्रतिबिम्बित किया गया है, लेकिन ऐसी फिल्में भी बनी जो भारत और भारतीयता से परे थी। यह बात तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल व मेरठ चलचित्र सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित फिल्म एप्रीसिएशन कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि सुरेंद्र सिंह ने कही।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में फिल्मों का परिदृश्य बदल गया है। भारत और भारतीयता से ओतप्रोत फिल्में दर्शकों द्वारा सराही जा रही हैं। इस कार्यशाला में तीन फिल्में दिखाई गईं। पहली फिल्म का शीर्षक छोटी सी बात था। इस फिल्म में बड़े शहरों में पनप रही असमाजिकता को दर्शाया गया है। दूसरी फिल्म अननोन काल थी। वहीं तीसरी फिल्म ऐतिहासिक तथ्यों को समेटे हुए डाक्यूमेंट्री के रूप में दिखाई गई। जिसका शीर्षक था विभाजन की विभीषिका। इस फिल्म में देश के बंटवारे में हुई घटनाओं को दर्शाया गया। विशेष आमंत्रित फिल्म निर्माता नितिन यदुवंशी ने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम संचालन एसोसिएट प्रोफेसर व मेरठ चलचित्र सोसाइटी अध्यक्ष डॉ. मनोज श्रीवास्तव ने किया। निदेशक प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में तिलक स्कूल के छात्रों के अतिरिक्त डॉ. यश्वेंद्र वर्मा, सुनील सिंह, लव कुमार सिंह, बीनम यादव, राकेश कुमार, केशव जिंदल, प्रियंशी व विद्या कालेज, महालक्ष्मी कालेज आदि के छात्र भी उपस्थित रहे।

विदा मित्रों

एक नई जीवन यात्रा के लिए आपको ढेरों शुभकामनाएं

बीजेएमसी छठे सेमेस्टर और एमजेएमसी चौथे सेमेस्टर के छात्र–छात्राओं को उनके जूनियर्स ने दी विदाई

पोस्ट ग्रेजुएट्स...

ग्रेजुएट्स...

चारों तरफ खुशगवार चेहरे, होठों पर कभी मुस्कान तो कभी ठहाके, शरीर में उमंग और उत्साह। यह नजारा दिखा 5 सितंबर को अप्लाइड साइंस के सभागार में।

अवसर था तिलक पत्रकारिता और जनसंचार स्कूल के बीजेएमसी छठे सेमेस्टर और एमजेएमसी चौथे सेमेस्टर के छात्र–छात्राओं के विदाई समारोह या फेयरवेल पार्टी का।

इसे विभाग के सहयोग से आयोजित किया था बीजेएमसी तीसरे व पांचवें सेमेस्टर और एमजेएमसी तीसरे सेमेस्टर के छात्र–छात्राओं ने। कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती की प्रतिमा पर दीप जलाकर और पुष्प अर्पित करके हुआ।

कार्यक्रम के पहले चरण में छात्रों ने शिक्षक दिवस पर शिक्षकों निदेशक डॉ. प्रशांत कुमार, डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती बीनम यादव और लव कुमार सिंह को उपहार देकर उनका सम्मान किया गया। संस्थान के कर्मचारियों को भी उपहार दिये गए।

इस दौरान नैना ने पुराने लोकप्रिय फिल्मी गीतों पर शानदार नृत्य प्रस्तुत करके उपस्थित लोगों का मन मोह लिया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में वैष्णवी, ट्विंकल ने नृत्य प्रस्तुत किया तो अंकुश ने गीत गाए। शिक्षक लव कुमार सिंह ने विदा ले रहे छात्रों के लिए कविता प्रस्तुत की। लक्ष्मी, साक्षी, निधि और नैना ने सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया।

इसी दौरान विदा ले रहे छात्रों के बीच टैलेंट हंट प्रतियोगिता हुई। छात्र–छात्राओं ने रैम्प वॉक किया, कई प्रकार के गेम खेले और फिर अपने–अपने अंदाज में स्वयं का परिचय भी दिया।

अंत में प्रश्नोत्तर राउंड हुआ। इसके बाद बीजेएमसी छठे सेमेस्टर से रोहित ठाकुर और सनोवर क्रमशः मिस्टर और मिस फेयरवेल चुने गये। एमजेएमसी चौथे सेमेस्टर से संभव सैम और उर्मिला को क्रमशः मिस्टर और मिस फेयरवेल चुना गया।

इस दौरान छात्र–छात्राओं का उत्साह देखते ही बनता था। कार्यक्रम के अंत में सभी ने नृत्य किया और भोजन का आनंद लिया।

शिक्षकों का सम्मान...

मिस और मिस्टर फेयरवेल

रंगारंग कार्यक्रम...

बेटी प्रोफेसर, बेटा इंजीनियर पर पिता को पसंद भोजन की गाड़ी लगाना

जिंदगी / विशेष रिपोर्ट–1

वरुणिका / लक्ष्मी / अदिति / हबीबा

मेरठ। उनकी बेटी प्रोफेसर है, जबकि बेटा सॉफ्टवेयर इंजीनियर है। खेती की कुछ जमीन भी है और साथ में इलेक्ट्रॉनिक की दुकान भी है। इसके बावूजद वे पिछले 25 वर्षो से बहुत कम दाम में लोगों के पेट भरने का अपना पसंदीदा काम करते आ रहे हैं। ये शख्स हैं नरेंद्र सिंह जो चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के बाहर स्ट्रीट फूड के कोने पर अपनी भोजन की गाड़ी लगाते हैं।

नरेंद्र सिंह 1997 से यानी पिछले करीब 25 सालों से यह काम करते चले आ रहे हैं। इस समय उनकी आयु 63 वर्ष की है और वे रोजाना ठीक साढ़े नौ बजे अपने ठिकाने पर पहुंच जाते हैं। इसके बाद वे अपराह्न तीन बजे तक भोजन उपलब्ध कराते हैं। नरेंद्र सिंह गाड़ी में भोजन लेकर चलते हैं।

नरेंद्र सिंह की भोजन वाली गाड़ी में रोटी, राजमा–चावल और कढ़ी चावल 40 रुपये प्रति प्लेट के हिसाब से मिलते हैं। हालांकि कई बार वे मजबूर लोगों को मुफ्त भी खिला देते हैं। उनका उद्देश्य लोगों को स्वच्छ बर्तनों में शुद्ध खाना खिलाना है।

नरेंद्र सिंह ने बताया कि उनके पास कुछ खेती की जमीन और इलेक्ट्रॉनिक की दुकान भी है। उनके परिवार में पत्नी, एक बेटा और एक बेटी है। बेटी गलगोटिया कॉलेज, नोएडा मे प्रोफेसर है और बेटा सॉफ्टवेयर इंजीनियर है।

बेटी प्रोफेसर और बेटा इंजीनियर तो फिर यह काम क्यों? क्या घर में कोई कमी है? क्या संतानों का व्यवहार ठीक नहीं है? उन्होंने कहा कि उन्हें कोई कमी नहीं है। वह यह काम केवल अपनी रुचि और संतुष्टि कारण कर रहे हैं। खेती और इलेक्ट्रॉनिक की दुकान कौन संभालता है? इस सवाल पर उन्होंने बताया कि यह काम वह खुद ही करते हैं। दिलचस्प बात यह है कि नरेन्द्र सिंह चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के छात्र भी रह चुके हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में पढ़ाई की थी।